वोल्गा के तल से गंगा के जल तक

रूसी हिन्दी अन्वेषियों के लेखों का संग्रह

От истоков Волги до священной Ганги

Сборник статей о сходствах и различиях русской и индийской культурных традиций

Москва
2018

UDC 008(470+540)(084)

От истоков Волги до священной Ганги : Сборник статей о сходствах и различиях русской и индийской культурных традиций. – М.: Пробел-2000, 2018. – 144 с.

ISBN 978-5-94282-659-4

В сборник вошли статьи на языке хинди, посвященные сходству и различию культурных традиций двух великих стран – России и Индии. Авторами статей являются студенты и преподаватели российских вузов – МГУ, РГГУ, СПбГУ, КФУ, в которых существуют кафедры индийских исследований, преподаются индийские языки, в частности, язык хинди.

Сборник статей студентов и преподавателей посвящен знаменательной дате в культурных связях России и Индии: в 2017 году наши страны отпраздновали 70-летие установления дипломатических отношений (1947–2017).

UDC 008(470+540)(084)

Статьи публикуются в авторской редакции.
Мнение редакции может не совпадать с мнением авторов.
Перепечатка материалов сборника осуществляется с разрешения редакционной коллегии.

© «Пробел-2000», 2018
ISBN 978-5-94282-659-4
© Коллектив авторов, 2018

अनुक्रम

रूसी और भारतीय साहित्य की समानता

हिंदी - रूसी साहित्य और समाज - डॉ अन्ना चेलनोकोवा 13

रूस में हिंदी भाषा और साहित्य का अध्यापन - डॉ ग्युज़ेल स्त्रेलकोवा 16

भारत एवं रूस के साहित्यिक संबंध - अर्त्योम मेषेज़निकोव 14

आज की हिन्दी कविता - क्सेनिया लेसिक 18

भारत में रूसी साहित्य और रूपांतर: आधुनिक अंतरसांस्कृतिक संपर्कों की नई दिशा - इल्या ओस्तपेंको 32

भारतीय और रूसी भाषाओं में समानता

भाषाई समानताओं की सुविधाएँ - दिमित्री बोब्कोव, डैनियल म्रात्हूज़िन 36

वर्णमाला संरचना के आधार पर रुसी तथा हिन्दी में निकटता - आन्ना पालागीना 39

रूसी और भारतीय मुहावरों में समानता: विभिन्न पशु-पक्षियों के संदर्भ एकातेरिना कोस्तिना 48

भारतीय और रूसी भाषाओं में साम्य - कोन्स्तांतिन दोदेलिया 51

भारतीय-रूसी भाषाएँ - आलेसिया कोरियुका 53

भारतीय और रूसी समाज

भारतीय और रूसी समाज - दार्या अन्तोनेन्को 58

भारतीय परिवार और रूसी परिवार - अलिसा एंटोनोवा 61

भारतीय व रूसी समाज - मरीया ओर्लोवा 63

भारत और रूस के बीच रिश्ते - कमीला तुर्सूनबेकोवा 66

भारत और रूस की संस्कृति - इवान मल्यूतिन 69

भारतीय और रूसी बोलचाल की शैली के बीच में साम्यता -आलेक्सांद्र बेलिकोव 71

भारतीय और रूसी रिवाज और परंपराएं - समानताएँ और मतभेद

भारत और रूस के धार्मिक त्योहार - कोई समानता है? - आन्ना जिमग्ल्याद 74

भारतीय व रूसी शादी का रिवाज - कोन्स्तांतिन दोदेलिया 78

भारतीय और रूसी भोजन

भारतीय-रूसी खानपान - वीक्तर पेरमिनफ़ 81

भारतीय «रायता» रूसी «ओक्रोश्का» समानताएं क्या है? - आनास्तासीया देमीदोवा, मक्सीम निकोलाशिन 84

भारतीय, रूसी और ततार व्यंजनों के आधार पर राष्ट्रीय व्यंजनों की तुलना - अनास्तासिया सुसलोपरोवा, क्सेनिया दूलत्सेवा 87

रूस और भारत के राष्ट्रीय व्यंजन: एक तुलनात्मक अध्ययन - वेरा लेबेदेवा 91

भारतीय और रूसी फैशन

भारतीय और रूसी फैशन - क्रिस्टिना ओक्सेनेंको 95

रूसी और भारतीय फैशन की विशेषताएं - मरिया शेगलोवा 98

भारतीय और रूसी त्योहार

भारतीय और रूसी त्योहारों में समानताएँ और अंतर - येव्गेनिया मुज़िचेन्को 101

भारतीय और रूसी समान त्योहार - अलेक्सान्द्रा शरापोवा 105

भारत और रूस में परिवहन व्यवस्था

भारत और रूस में परिवहन व्यवस्था - विक्टोरिया बाजिलेवा 109

भारतीय और रूसी समान स्मारक

रूस-भारत में समान स्मारक – डॉ इंदिरा गाज़िएवा 112

रूसी और भारतीय जलवायु

सेंट-पीटर्सबर्ग और मुंबई: दो शहरों की संस्कृति में बारिश - यूलिया बेशूक, इरीना सोकोलोवा 121

भारतीय और रूसी नदियाँ

वोल्गा से गंगा तक: दो राष्ट्र समानताएं - डॉ गूज़ेल म्रात्हूज़िना, अयगूल तागीरोवा 126

रूसी और भारतीय संस्कृतियों की प्राचीन जड़ों ने उन्हें निकटता दी ओल्गा कपेलको 129

भारत और रूस : जीवन मूल्यगत समानताएं - डॉ मीनू शर्मा 137

रूसी और भारतीय साहित्य की समानता

डॉ अन्ना चेलनोकोवा

सेंट-पीटर्सबर्ग राजकीय विश्वविद्यालय
ladyeng@mail.ru

हिंदी - रूसी साहित्य और समाज

भारतीय संस्कृति की एक बहुत महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह अपनी प्राचीन प्रथाएँ कभी न भूलते हुए आगे चलने को तैयार है। भारतीय समाज और साहित्य का गहरा सम्बन्ध है और दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। मालूम होता है कि किसी भी संस्कृति का साहित्य इस संस्कृति के समाज का एक दर्पण होता है, इसलिए साहित्य मानव जीवन के उत्थान व चारित्रिक विकास में सदैव सहायक होता है। यह बिलकुल सही बात है कि जीवन और साहित्य का अटूट संबंध है। मनुष्य का पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा तथा जीवन निर्वहन भी समाज में साहित्य के आधार पर होता है।

प्राचीन और आधुनिक भारतीय समाज और हिंदी साहित्य भी इस नियम के अपवाद नहीं हैं। प्राचीन समय से भारतीय समाज में हुई उथलपुथल को हिंदी आदिकालीन (सिद्ध, जैन तथा नाथ) और भक्तिकालीन (गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, मीराबाई आदि) साहित्य ने व्यक्त किया है। विभिन ऐतिहासिक कारणों से (जातीय और भाषिक बहुरूपता, धार्मिक और दार्शनिक परम्पराएँ, अनेक विदेशी आक्रमण) भारतीय समाज अपने आप में वैश्विकता को समेटता हुआ बहुसांस्कृतिक समाज बन चुका है | हिंदी साहित्य में भारत की बहुसांस्कृतिकता स्पष्ट रूप से झलकती है | मानव सभ्यता के विकास में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, साहित्य एवं समाज का संबंध युगों से देखा गया है। आर्य, शक, हूण, मुस्लिम, अंग्रेज़ , पुर्तगाली आक्रमणों को सहने वाला भारत अपने हिंदी साहित्य में आर्य संस्कृति , मुस्लिम संस्कृति, अंग्रेजी सभ्यता, मार्क्सवादी चेतना आदि कई परिवर्तनों को समेटता है।

मानव की विचारधारा में परिवर्तन लाने का कार्य साहित्य द्वारा ही किया जाता है - आदिकालीन ,भक्तिकालीन ,रीतिकालीन साहित्य से लेकर समकालीन हिंदी साहित्य तक भारतीय समाज के सामाजिक ,सांस्कृतिक आदि आयामों का क्रमिक विकास देखा जा सकता है क्योंकि साहित्य का सृजन मानव पटल में ही होता है| किसी भी काल के साहित्य के अध्ययन से हम तत्कालीन मानव जीवन के रहन-सहन व अन्य गतिविधियों का सहज ही अध्ययन कर सकते हैं । दूसरी तरफ साहित्य भी समाज के परिवर्तित स्वरूप के साथ बदलता रहता है । उन्नत साहित्यक जीवन को बल नैतिक मूल्य प्रदान करते हैं जो उसे उत्थान की ओर ले जाते हैं ।

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल विकास और परिवर्तन का युग माना जाता है, यहाँ तक कि स्वछंदतावाद और उत्तर स्वछंदतावाद युगों को साहित्यक क्रांति के युग कहते हैं| समकालीन हिंदी साहित्य और भारतीय समाज के सिलसिले के बारे में बहुत-से मशहूर भारतीय विद्वान और साहित्यकार बीसवीं शताब्दी के शुरू से ही बोलते रहे हैं - उदाहरण के लिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी साहित्य को 'ज्ञानराशि का संचित कोश' मानते हैं, आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार साहित्य 'जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब' होता है और पंडित बाल कृष्ण भट्ट के अनुसार 'जन समूह के हृदय का विकास' होता है।

प्रथम तथा द्वीतीय विश्वयुद्ध, बर्लिन दीवार का पतन, भूमंडलीकरण से लेकर हाल ही में घटित ब्रेग्ज़ीट तक की घटनाएँ भारतीय समाज को प्रभावित करती हुई साहित्य में अंकित होती रही हैं, अभी भी हो रही हैं। भारतीय समाज और हिंदी समाज में एक साथ कई समाजों की उपस्थिति है। पूर्वोत्तर भारत का समाज, कश्मीर घाटी का समाज, दलित समाज, आदिवासी समाज आज कई मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। भारत में स्वाधीनता संग्राम ,विभाजन की त्रासदी से लेकर हाल ही में उदित स्वच्छ भारत अभियान तक कई बातें साहित्य को जलवायु दे रही हैं। आज के साहित्यकार वर्तमान भारत की समस्याओं को अपनी रचनाओं में पर्याप्त स्थान दे रहे हैं।

साहित्य और समाज का यह सिलसिला भारतीय राजनीतिज्ञों को अच्छी तरह मालूम है और इस कारण से वे हमेशा हिंदी भाषा की समस्या पर बहुत ध्यान देते है| महात्मा गांधी के अनुसार 'भारत में हिंदी ही एकमात्र राजभाषा हो सकती है'; हिंदी, साहित्य और समाज विषय पर श्रीमती इंदिरा गांधी की लिखी हुई एक सुन्दर कविता भी है:

हिंदी देश की एकता की ऐसी कड़ी है
जिसे मज़बूत करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

इतने बड़े देश में
जहाँ इतनी भाषाएँ हैं,
वहाँ देश की एकता के लिए आवश्यक है कि
कोई भाषा ऐसी हो जिसे सब बोल सकें,
जो एक कड़ी की तरह सबको मिला - जुला कर रख सके,
इसलिए हिंदी को बढ़ाना हम सबका कर्त्तव्य है।

भाषा के बिना समाज और साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती है और साहित्य के बिना समाज की तरक्की संभव नहीं होती। भारतीय समाज व हिंदी साहित्य के इस ताने बाने में कई वैश्विक अवधारणायें ,यथा – स्त्रीवाद ,दलित विमर्श, उत्तरआधुनिकता ,उत्तर सत्यवाद भी अत्यंत प्रभावी रूप में दर्ज है |साहित्य के द्वारा समाज का निर्माण होता है और इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज और हिंदी साहित्य के भविष्यकालीन रूप पर भारतीय तथा विदेशी दृष्टिकोण से विचार किया जाना वर्तमान समय की आवश्यकता है।

रूसी साहित्य की अपनी ही दिशा है, अपना ही रास्ता, अपनी समस्याएँ भी होती हैं । फिर भी शुरू से (9 वीं शताब्दी की ऐतिहासिक और लोक कथाएँ) अभी तक रूसी साहित्य रूसी समाज का दर्पण रहा है । 20वीं शताब्दी में भारतीय लोगों का रूसी साहित्य से परिचय हुआ (अनुवादों में), और तब पुश्किन, तोलस्तोय, चेखोव आदि की रचनाएँ भारतीय पाठकों को बहुत ही पसंद आईं।

रूसी लेखकों ने अपनी कहानियों, नाटकों, कविताओं, उपन्यासों में रूसी समाज की विशेषताओं को चित्रित किया है। उनकी रचनाओं से भारतीय लोगों को अपने रूसी भाई-बहनों के जीवन के बारे में काफ़ी अच्छी जानकारी प्राप्त हो सकी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिंदी साहित्य के विकास में रूसी साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक हिंदी साहित्य काफ़ी जवान है और – अफ़सोस की बात – रूस में अच्छी तरह अभी तक मालूम नहीं है। आशा है कि रूसी लोगों को हिंदी साहित्य के बारे में अधिक पता होगा और हम – रूसी भारतविद् – इसके लिए यथासंभव काम करने का वचन देने को तैयार हैं।

डॉ ग्युज़ेल स्त्रेलकोवा

एशिया और अफ़्रीकी देश अध्ययन संस्थान
मास्को राजकीय विश्वविद्यालय
strelkova.guzel@gmail.com

रूस में हिंदी भाषा और साहित्य का अध्यापन

रूस में भारत सम्बंधित अन्वेषण और अध्ययन यानी इंडोलॉजिकल स्टडीज १९वीं शताब्दी के मध्य में शुरू हो गए, जब सैंट-पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय के ओरिएण्टल (पूर्वी) विभाग की स्थापना हुई एवं सन् १८५८ में भारतीय भाषाओं और साहित्य सम्बन्धी ज्ञानपीठ का उदघाटन हुआ। परन्तु उस ज़माने में संस्कृत और पाली भाषाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता था, इसलिए हिंदी और अनेक दूसरी भारत की स्थानीय भाषाओं का अध्ययन और शिक्षण सन् १९२० से शुरू हुआ, क्योंकि इससे पहले रूसी भारत-तत्व-विशारदों ने क्लासिक अनुसन्धान पर विशेष ध्यान दिया था। रूसी भारत-तत्त्व-विशारद संस्कृत साहित्य के अध्ययन और अनुवाद में अपनी सफलताओं के लिए प्रसिद्ध थे। विशेष प्रसिद्धी उन्हें ओटो बेह्तलिंगक के विशाल - तथा-कथित साँक्त पीटर्सबर्ग «संस्कृत वोर्टेरबुख» («Sanskrit-Wörterbuch» by Otto Behtlingk) के लिए मिली।

सन् १९२० में मास्को ओरिएण्टल संस्थान और लेनिनग्राद जीवित भाषाओं के संस्थान का उदघाटन हुआ। इन संस्थानों में हिंदी भाषा भी सिखाई जाती थी। हिंदी भाषा सिखाने के अग्रदूतों में से आकडेमिशियन अलेक्सेय बरान्निकोव (१८९० -१९५२) एक थे। वे कियेव विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर थे, और साँक्त पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. डिगरी उन्होंने प्राप्त की। वहां उनके प्राध्यापक दो विख्यात और महान रूसी प्राच्य वैज्ञानिक, संस्कृत और क्लासिक भारतीय साहित्य के विद्वान सेर्गेय ओल्डनबुर्ग और फ्योदोर श्चेरबातसकोय थे, लेकिन बरान्निकोव सोचते थे कि २०वीं शताब्दी में क्लासिकल भारतीय भाषाओं का अध्ययन एवं आधुनिक भाषाओं के शिक्षण और

अनुसन्धान में मेल बैठाना चाहिए था। बरान्निकोव विदेशी विद्वानों में से एक प्रथम ज्ञानी थे जिन्होंने प्रेमचंद की प्रतिभा का उच्च मूल्यांकन किया। लियो टॉलस्टॉय की कहानियों के प्रेमचंद के अनुवादों की आलोचना उन्होंने लिखी और प्रेमचंद की "सौत" कहानी का उक्रेनियन भाषा में अनुवाद किया। कुछ समय बाद उन्होंने लल्लू जी लाल का "प्रेम सागर" और तुलसी दास का "राम चरित मानस" इन दोनों रचनाओं का अनुवाद भी किया। अर्थातः वे संस्कृत और हिंदी खड़ी बोली ही नहीं लेकिन अवधी और ब्रज ये साहित्यिक भाषाएँ भी जानते थे। उन्होंने अर्य शूरा द्वारा रचित "जातकमाला" का रूसी अनुवाद भी किया। यह तथ्य कि हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन के लिए संस्कृत का आधारात्मक ज्ञान आवश्यक है, आगे भी लेनिनग्राद विश्वविद्यालय और मास्को विश्वविद्यालय के पूर्व भाषाओं के संस्थानों की एक मुख्या विशेषता थी।

प्रोफ़ेसर एलेक्सी बरान्निकोव का एक उत्कृष्ट विद्यार्थी वसीलिय बेसकरोवणीय लेनिनग्राद पूर्व भाषाओं के संस्थान के भारतीय विभाग में १९२६ -१९३० वर्षों में हिंदी भाषा सीख रहे थे और आगे चलकर एक प्रख्यात भाषा विशेषज्ञ और उर्दू तथा हिंदी भाषाओं के पंडित हुए। आकडेमिशिएंस स.फ.ओल्डेनबर्ग और आ. बरान्निकोव द्वारा प्रेरित होकर वे हिंदी-रूसी और रूसी-हिंदी शब्दकोषों की रचना करने हेतु काफी साल व्यस्त रहे। वे दोनों शब्दकोष पिछले सदी के पांचवे दशक में प्रकाशित हुए, जब सोवियत-भारतीय संबंधों का नया दौर आया। आज भी ये शब्दकोष बहुत लाभदायक और मूल्यवान हैं। रूस में ही नहीं बल्कि यूरोप और भारत में भी हिंदी विशेषज्ञ और विद्यार्थी लोग इन शब्दकोशों की बहुत मांग करते हैं। इन दोनों शब्दकोशों में हिंदी व्याकरण की रूपरेखा भी दी गयी है, जो बहुत उपयोगी है। यहां एक उदाहरण प्रस्तुत है जिससे यह प्रमाणित होता है कि रूसी लोग हिंदी भाषा में बड़ी रुचि लेते हैं और बेसकरवणीय द्वारा रचित रूसी-हिंदी और हिंदी-रूसी शब्दकोशों की मदद से वे हिंदी सीख भी सकते हैं - दनिइल अंद्रेयेव (१९०६ – १९५९) एक प्रख्यात रूसी लेखक लियोनिद अंद्रेयेव के पुत्र थे, और खुद लेखक भी थे जो भारत में बहुत दिलचस्पी रखते थे। दनिइल अंद्रेयेव विश्वास रखते थे कि अपने एक भूतपूर्व जन्म में वह भारत में पैदा हुए थे। इसलिए भारत के बारे में अपनी स्मृतियाँ और कहानियां वे अपने मित्रों को सुनाते थे। ये मित्र उन्हें कभी कभी "भारतीय कुँवर"(इंडियस्कीय प्रिंट्स) नाम देते थे. दनिइल अंद्रेयेव की प्रमुख रचना "विश्व गुलाब" (रोज़ा मीरा) है। इस रहस्यवादी ग्रन्थ में यह रचनाकार बहुत बार भारत तथा बौद्धवाद, हिन्दू देवता, महात्मा गांधी और स्वतंत्रता के लिए भारतीय लोगों के संघर्ष के बारे में लिखते हैं या इन सब विषयों का ज़िक्र करते हैं। दनिइल अंद्रेयेव की बहुत ऎसी कविताएं हैं जिन्हें कवि ने भारत को

समर्पित किया। उन में से एक है 'वात्सल्य'। इस कविता का शीर्षक है यही हिंदी शब्द - किसी टिप्पणी या अनुवाद के बिना। उनके द्वारा रचित "स्त्राननिकी नोची" (रात के पथक) उपन्यास का एक मुख्य पात्र भारत-तत्व-विशारद है जो भारत की ओर सदा आकर्षित रहता था। दनिइल अंद्रेयेव और उनके कोई मित्र या रिश्तेदार पिछले सदी के तीसरे दशक में 'स्टालिन ज़माने के दौरान शासकीय दमन के शिकार हुए, उन पर 'सोविएत सत्ता के दुश्मन' का आरोप लगाया गया था। उन में से किसी को मौत की सज़ा या जीवन कैद सुनाया गया। लेकिन जेल में भी दनिइल अंद्रेयेव अपने मित्रों की मदद से वसीलिय बेसकरवणीय के हिंदी रूसी शब्दकोष का इस्तेमाल कर सकते थे और शायद इस शब्दकोष ने दनिइल अंद्रेयेव को जीवित रहने में बहुत मदद दी।

दुसरे महायुद्ध के लेनिनग्राद ब्लॉकेड के दो सालों के बाद ही लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा की पढ़ाई फिर शुरू हो गयीं। उस समय भारतीय दर्शन के एक प्रोफेसर जो हिंदी भाषा भी सिखाते थे वह प्रख्यात हिंदी लेखक राहुल सांकृत्यायन थे। उनकी एक छात्रा जो उनकी क्लास में १९४६ -१९४७ में सीखती थी, नीना गव्र्युषिना अनेक सालों बाद एक मान्य हिंदी भाषा और साहित्य विशेषज्ञ हो गयी। वह हिंदी भाषा तथा आधुनिक हिंदी साहित्य की मशहूर ज्ञाता हैं। उन्होंने एक पुस्तक "प्रेमचंद और बीसवीं शताब्दी का हिंदी साहित्य" और हिंदी साहित्य के भिन्न विषयों पर अनेक लेख लिखे। डाक्टर नीना गव्र्युषिना व्यक्तिगत रूप से प्रख्यात हिंदी लेखक जैनेन्द्र कुमार, भीष्म साहनी और अज्ञेय से मिलीं. सोवियत संघ की यात्रा दौरान उन्होंने इन लेखकों की अनुवादिका के रूप में कार्य किया और उनकी मदद की। गव्र्युषिना ने इन भारतीय लेखकों को मास्को और महान रूसी लेखक लियो टॉलस्टॉय की 'यास्नया पोल्याणा' भू संपती और भवन भी दिखाया था। नीना दमित्रीएवना गव्र्युषिना की उम्र अब ९० साल से ज़्यादा है लेकिन वे बहुत अच्छी तरह राहुल सांकृत्यायन से अपनी पहली मुलाकात याद करती हैं। उस ज़माने में यह प्रख्यात विद्वान जिनको बहुतेक भाषाएँ आती थीं, एक रूसी पूर्व देशों की विशेषज्ञा जिनका मुख्य विषय मंगोलिया था, उन से व्याह किये हुए थे और लेनिनग्राद में रहते थे। उनका एक छोटा बेटा था, और नीना गव्र्युषिना की माता एक बच्चों की डाक्टर -पेडिअट्रिस्ट थी और अगर ज़रूरत पड़ी तो उनके यहां बच्चे का इलाज करने के लिए आती थी।

सौभाग्य की बात थी कि वे लेनिनग्राद के एक ही इलाके में रहते थे। १९४६ साल के वसंत के समय माध्यमिक पाठशाला के ग्रेजुएट जिन की संख्या दूसरे महायुद्ध और लेनिनग्राद ब्लॉकेड के बाद ज़्यादा नहीं थी, उनको लेनिनग्राद

विश्वविद्याल में प्रवेश परीक्षा देने का निमंत्रण दिया गया था। और नीना गव्र्युषिना इस के बारे में भी सोच रही थी. उनको एक दूसरी भारत विशेषज्ञ ने प्रोत्साहन दिया. उनका नाम नीना गोल्डमैन था। उन्होंने वृन्दावन लाल वर्मा के रचनाओं का अध्ययन किया और उनके उपन्यासों का अनुवाद भी किया। डाक्टर गोल्डमैन पाठशाला में आयीं और शालकारियों को भारत और हिंदी भाषा के बारे में बहुत सुनाया, भारत की प्रशंसा की और विश्वविद्यालय में प्रवेश करने के सुअवसर लेने को प्रोत्साहित किया। नीना गव्र्युषिना ने परीक्षा पास करने का निश्चय किया और हिंदी भाषा सीखने का निर्णय राहुल सांकृत्यायन से मिलने के बाद ही किया क्योंकि उन्होंने ऐसे अध्ययन का महत्व विस्तार से समझाया। इस का कारण था कि वे भविष्य में भारत-सोवियत संबंधों का विकास करने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थे। राहुल सांकृत्यायन ने महान भारतीय सभ्यता और संस्कृति, इतिहास के बारे में बताया। नीना गव्र्युषिना अभी तक राहुल सांकृत्यायन के बहुत दिलचस्प और गंभीर व्याख्यानों की स्मृति रखती हैं। महान विद्वान अपने लेक्चर कभी रूसी कभी अंग्रेज़ी या हिंदी में सुनाते थे और उनका व्यक्तित्व, सिखाने का तरीका बहुत आकर्षक थे। नीना गव्र्युषिना अब अपनी स्मृतियों पर काम कर रही हैं और हमें आशा है कि भारतीय और हिंदी विद्वानों तथा साहित्यकारों से उनकी मुलाकातों के बारे में कई नयी एवं बहुत महत्वपूर्ण जानकारी हमें मिलेगी। वे उस ज़माने में लेनिनग्राद में हिंदी सिखाने के बारे में भी लिखने की योजनाएं भी बना रही हैं। इस के आधार पर हमारे देश में हिंदी के अध्यापन का तरीका कैसे बदलता रहा और उसका क्या विकास हो रहा था, इस के बारे में नया और निजी ज्ञान मिलेगा जो बहुत दिलचस्प और लाभदायक है। अब भी हम समझते हैं कि ऐसे अन्वेषण आम तौर पर भारत के प्रति और इस महान देश के लोग, उनके इतिहास, साहित्य और सभ्यता की ओर वास्तविक निःस्वार्थ आकर्षण पर आधारित थे।

एक और महत्त्वपूर्ण संस्था जहां हिंदी भाषा १९२० से लेकर १९५४ साल तक सिखाई जाती थी वह मास्को ओरिएण्टल इंस्टिट्यूट यानी मास्को पूर्वी देशों का संस्थान था। उसकी स्थापना १८१५ से उद्घाटित लाज़रेव पूर्वी भाषाओं के संस्थान के आधार पर हुई तथा इस में अनेक दूसरे संस्थान जिन में पूर्वी भाषाएँ सिखाई जाती थीं वे भी शामिल हुए। १९५४ में इस संस्थान का पुनःसंगठन किया गया था और इसके बाद लगभग सब दफ्तर यानी भारतीय भाषाओं का, फारसी, अरब और अनेक दूसरी पूर्वी भाषाओं के विभाग अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के मास्को राष्ट्रीय

शैक्षणिक संस्थान में स्थानांतरित किये गए थे। इधर प्रोफ. जलमान दीमशित्स, जिन्होंने सबसे लोकप्रिय हिंदी भाषा पाठ्य-पुस्तक के तीन भाग लिखे थे, वे बहुत साल हिंदी सिखाते रहे।

यह पाठ्य-पुस्तक बहुत मूल्यवान है क्योंकि इस की अनेक महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। सर्वप्रथम यह हमारे देश में ऐसी पहली पाठ्य-पुस्तक थी, जिस में व्याकरण और अभ्यासों के आलावा आधारभूत और साधारण एवं दिन बा दिन शब्दावली और कई ख़ास विषय भी समाविष्ट किये गए थे। आज दीमशीत्स की पाठ्य- पुस्तक थोड़े पुराने ढंग की लगती है, लेकिन अब तक काफी लोकप्रिय भी है। इस पाठ्य-पुस्तक की सुविधा और श्रेष्ठता ये थीं कि उस के दूसरे भाग से लेकर बहुत सी लोकप्रिय हिंदी लेखकों की कहानियां, उदाहरणार्थ प्रेमचंद की "ठाकुर का कुआ", जयशंकर प्रसाद की "छोटा जादूगर" या यशपाल की "तूफ़ान का दैत्य" ऎसी कहानियों का अभ्यासों के लिए मुख्या टेक्स्ट के रूप में इस्तेमाल किया गया था। इस पुस्तक में "भारत का संविधान' जैसे टेक्स्ट भी थे, और मुख्या इरादा यह भी था कि हिंदी बुनियादी ज़रूरतों के लिए बोलचाल की भाषा ही नहीं बल्कि महान राष्ट्र जिसकी महान संस्कृति और साहित्य हैं उसकी भाषा भी सिखायी जाये। शब्दावली, व्याकरण, व्याख्या और अभ्यास भिन्न स्तरों के विद्यार्थियों के लिए काफी सुबोध और स्पष्ट थे, इसलिए अभी तक दीमशित्स की पाठ्य-पुस्तक का इस्तेमाल किया जाता है। आम तौर पर रूस में प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा सीखनेवाले विद्यार्थी लोगों के लिए वह बहुत उपयोगी है ,लेकिन उसकी लोकप्रियता थोड़ी सी कम हो जाती है। शायद मुख्य कारण यह है कि अब कई अत्याधुनिक और नए तरीके उपलब्ध हैं तथा ऑडियो व विज़ुअल उपकरणों की उपलब्धता भी है।

पिछली शताब्दी के ५वे दशक में जब भारत और सोविएत संघ के बीच निकट राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित हुए हिंदी सीखना बहुत लोकप्रिय हो गया था। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संस्थान में जहां कूटनीतिज्ञ होने वाले विद्यार्थी अध्ययन करते थे वहां मुख्यतः यूरोपीय देशों की राजनीति और योरोपीय भाषाएँ सिखाई जाती थीं - पूर्वी भाषाएँ इतने पैमाने पर नहीं, इसलिए एक और संस्थान मास्को विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्थापित किया गया था यानी 'पूर्वी भाषाओं का संस्थान'। इसका उद्घाटन १९५६ में हुआ था, और जो स्नातकोत्तर मास्को विश्वविद्यालय में प्रवेश परीक्षाओं में पास हो गए वे पूर्वी भाषाओं के संस्थान के

पहले विद्यार्थी बन गए थे। उनका डिप्लोमा दो मुख्य विषयों का था अर्थात इतिहासकार या भाषा और साहित्य विशेषज्ञ। इस के साथ साथ उन्हें एक और कार्य दिया जाता था यानी समीक्षक - पूर्वी भाषाओं का अनुवादक. और उनकी भाषाएँ थीं हिंदी या अरब, फ़ारसी, चीनी वगैरह। १९७२ साल से जब एक और - सामजिक - आर्थिक फैकल्टी की स्थापना हुई तो इस संस्थान का नाम भी बदल गया था। अब वह एशियाई और अफ्रीका देशों का संस्थान है। इंडियन फिलोलोजी विभाग का इतिहास १९५६ साल से शुरू हुआ। उसका पहले प्रमुख म. न. सोतनिकोव थे जिनका शास्त्रीय विषय था हिंदी भाषा का व्याकरण. इसके बाद १९ वी शताब्दी के छठे दशक के मध्य में डाक्टर अनटोलीय तिखोनोविच अक्स्योनोव भारतीय भाषाओं के विभाग का प्रमुख हो गए। वे फौजी अनुवादकों के संस्थान के स्नातकोत्तर थे और अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी भाषाओं के व्याकरण के विद्वान थे। वे बहुत उत्सुकता के साथ भारतीय भाषाएँ पढ़ाते थे और उनके प्रोत्साहन से पंजाबी, बंगाली, मराठी, तमिल, मलयालम जैसे दूसरी भारतीय भाषाओं का अध्यापन भी शुरू हो गया। ये भाषाएँ दूसरी भारतीय भाषा के रूप में उन विद्यार्थियों को सिखायी जाती थी जो मुख्य भाषा अर्थात हिंदी, उर्दू या तामिल सीखते थे। डाक्टर अक्स्योनोव ने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के रशियन स्टडीज केंद्र की स्थापना में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उनके ज़माने से हमारे संस्थान और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे॰ एन॰ यू॰) के बीच बहुत निकट सम्बन्ध कायम रहते हैं। हिंदी और रूसी भाषा के विद्वानों के आदान - प्रदान का कार्यक्रम अब तक चल रहा है।

सन् १९७९ से अब तक भारतीय भाषाओं और साहित्य विभाग का प्रमुख प्रोफ. बोरिस ज़खारीन हैं। वे संस्कृत, कश्मीरी के विद्वान हैं और आम (general) भारतीय भाषा विज्ञान की विशेषज्ञ हैं। वास्तव में हमारे विभाग के लगभग सभी स्नातकोत्तरों को दो या तीन भारतीय भाषाएँ आती हैं और उनमें से अनेक ऐसे विद्वान हैं जिन्होंने प्राचीन भारतीय भाषाओं का मौलिक ज्ञान भी प्राप्त किया हैं। ये सभी सैद्धांतिक फिलोलोजिकल कोर्स तथा स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरांत वे स्वतन्त्र अध्ययन, अन्वेषण और अध्यापन के लिए तैयार होते हैं।

कहना चाहिए कि व्यावहारिक उद्देश्य के लिए हिंदी भाषा सिखाना रूस (सोविएत संघ) में १९४७ यानी भारत की स्वतंत्रता के वर्ष शुरू हो गया हालांकि